मुक्तिबोध की कथा भाषा

–प्रो. सत्यपाल तिवारी
निदेशक, मानविकी विद्याशाखा,
उ.प्र.राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

मुक्तिबोध की कथा साहित्य की भाषाः– भाषा 26 और अर्थ का सत्युज्य है वह शब्दार्थों का संवहन करने वाली होती है। अर्थो का जितना है संबल और प्रांजल वहन भाषा करेगी । वह उतनी है बलवती और अर्थवती होगी। यही भाषारथी शक्ति है। भाषा निरन्तर परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया से गुजरती चलती है। अपने को समयानुकूल बनाती चलती है यह उसका गुण है। चाहे वह काव्य की भाषा हो या कि गद्य की हिन्दी भाषा हो या फिर अन्य कोई भाषा। गद्य के विकास में साथ ही साथ उसकी भाषा संरचना के विकास की भी प्रक्रिया निरन्तर उतार–चढ़ाव से होकर गुजर रही है। जैसे–जैसे गद्य रूपों का विकास और विस्तार बढ़ रहा है वैसे ही भाषा से सम्बन्धित नयी–नयी समस्याएँ भी सामने आयी। उपन्यास और कहानी के तन्त्रागत विकास और कथा प्रस्तुति की विदधता के कारण भाषागत संभावनाओं का सूक्ष्मतर बोध भी विकसित हुआ। कथा प्रस्तुति से सम्बद्ध नयी दीक्षा का प्रथावन केवल कथाकार पर पग आपितु उसके पाठयों पर भी पड़ा। उसकी अपेक्षाएँ भी बढ़ रही थी। वह गद्य भाषा में और अधिक संभावनाएँ तलाश रहा था। इस तलाश का ही वर्तमान की पाठ्य की विवेचक बुद्धि की लगातार बढ़ रही थी। यही कारण है कि कथावार निरन्तर एक नयी कथा भाषा गढ़ रहे थे। भाषा से सम्बन्धित इन तमाम समस्याओं से जुड़कर हिन्दी कथा भाषा का नया स्वरूप निर्मित और विकसित हो रहा था। इस दृष्टि से प्रेमचन्द का योगदान महत्वपूर्ण है। उनके हाथों हिन्दी कथा भाषा होती हुई दिखाई देती है। आगे चलकर अज्ञेय, धर्मवीर भारती निर्मलवर्मा तथा मुक्तिबोध अपने–अपने कथा साहित्य में भाषा प्रयोग के अनेक स्तरों से गुजरते हैं। भाषा में नया प्रयोग भी करते हैं। उसे एक मुकम्मल स्वरूप प्रदान करते हुए दिखाई देते है।

वस्तुतः कविता के प्रसंग में गीता और गद्य में कथा साहित्य मानवीय संवेदना और अभिव्यक्ति के प्रारम्भिक माध्यम माने जा सकते है। ये भाषा के एकदम आरम्भिक आविष्कार हैं। ये भाषा के स्वरूप भेदी नहीं निश्चित करते है अपितु उसे अर्थ बोध से संवृत्त करते है। युग परिवेश, युगीन समस्याओं के स्वरूप में परिवर्तन ज्ञान के नवीन धर्मों का विकास तथा मानवीय बोध में आये परिवर्तनों ने कथा के स्वरूप, शिल्प और बोध में भी व्यापक परिवर्तन किया। कमकालीन कथा–साहित्य की एक खास विशेषता है उसके कथ्य–शिल्प और भाषा के बीच गहरा सम्बन्ध होना। इन तीर्थ की एक रूपता और पारस्परिकता ही उसे श्रेष्ठ और सर्वग्रहणीय बनाती है। चित्रणीय विषय और शिल्प के अनुसार भाषा का वैविध्य कहानी और उपन्यास की भाषा का प्रमुख गुण होता है। भाषा की अपनी सर्जनात्मकता से न केवल एक रसता दूर होती है। वरन यथार्थ के सटीक आंकन और प्रभावपूर्ण चित्रण में सहायक मिलती है। प्रेमचन्द और अज्ञेय के अनन्तर भाषा को बहुस्पर्शी बहुधर्मी और अर्थ संवहनीय बनाने सबसे महत्वपूर्ण कार्य मुक्तिबोध के यहाँ होता दिखाई देता है।

मुक्ति बोध आधुनिक कथाकार है। उनका कथा साहित्य चाहे वह कहानी हो, निबन्ध, आलोचना इतिहास लेखन, डायरी, संस्मरण आदि उनकी रचना धार्मिता को बहु–आयाम देते है। चिन्तक और आलोचक के रूप में उन्होंने नयचे जीवन–मूल्यों के अनुरूप नये साहित्य मानदण्डों और नये भाषा रूपों का भी निर्णय किया। उनके कथा साहित्य में आज की विसंगतियाँ, विडम्बनाएँ तथा मानवजीवन आपकी सम्पूर्णता के साथ चित्रित होता हुआ दिखाई देता है। अपने कथा साहित्य का सारा रूप विधान वे भाषा के सर्जनात्मक प्रयोग से खड़ा करते हुए दिखाई देते है। उनकी कथा साहित्य का पूरा

विजन भाषा की इसी मजबूत नींव पर खड़ा है। मुक्तिबोध ने अपनी कहानियों में जो कथा विषय का विजन रखा है उसको समूचे संदर्भ चरित्र और उसकी समूची विविधता और गतिशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। अपनी कहानियाँ डायरी, सस्मरणों तथा निबन्धों के माध्यम से उन्होंने व्यक्ति परिवार, समाज देश तथा मानवता की संवेदना और समस्याओं को व्यक्त किया है। इसके लिए वे जिस कथा संसार का निर्माण करते हैं उसमें कई तरह के चरित्र घटनाएँ, मानसिकता, सांस्कृतिक तथा सामाजिक परिप्रेक्ष्य हैं तथा इन सबकी प्रभावशाली व सटीक अभिव्यक्ति हो इसके लिए उस अनुरूप ही भाषा की सृष्टि है। मुख्य रूप से कवि होने के बावजूद भी उनकी कहानियाँ किसी विशिष्ट कहानीकार का याद दिलाती है उनके अपने जीवनानुभव ही इनकी कहानियों में व्यक्त होते है। वे हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपने लेखन का अभिव्यक्त होते हैं। उनकी कविता तथा कहानी एक दूसरे के अन्यान्यों होती है। कविता पढ़ते समय ऐसा लगता है मानो वे कहानी कर रहे है और उनकी कविताएँ कहानी का आभास कराती है। उनकी हर लम्बी कविता में एक कहानी मौजूद रहती है। वह चाहे ब्रह्मराक्षस हो या फिर अँधेरे में।

मुक्तिबोध उन रचनाकारों में आते है जिन्होंने अपनी प्रतिभा के माध्यम से साहित्य की खाई को तोड़ दिया। वे किसी खास खांचे में बांधकर नहीं रहे । उन्होंने अपनी प्रतिभा के माध्यम से हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी का बोध मनवाया। इनकी हर रचना में कहानी मौजूद है। उनकी आलोचना डायरी निबन्ध तथा पढ़ते ही लगने लगता है कि हम कहानी पढ़ रहे है। वह भी ऐसी कहानी जिसमें कहानी कला के सभी तत्व विद्यमान हो मुक्तिबोध अकेले ऐसे कलाकार है। जिनके अनुभव का आवेग अभिव्यक्ति की अमता से इतना बड़ा था कि सारा साहित्य टूट गया। ''मुक्तिबोध की कहानियों में एक ही अनुभव विवरण के सैकड़ों रूप मिलते है। हालाँकि यह बात उनके सारे साहित्य पर लागू होती है। लेकिन एक वही अनुभव होते हुए भी उनकी कहानियों में कहीं कोई दोहराव नहीं है। यह मुक्तिबोध की कार्य–दृष्टि ही है। जो एक ही अनुभव के बावजूद मुक्तिबाध की हर कहानी में नवीनता की सृष्टि करती है और ये कहानियाँ सभ्यता–समीक्षा के वृहत्तर दायित्व का महत्वपूर्ण आयाम बनाती है।'' 22 उदाहरण के लिए उनकी ब्रह्मराक्षस का शिष्य' कहानी देखी जा सकती है। जो ब्रह्म राक्षस नामक उनकी कविता का ही प्रकारान्तर से रूप है। स्थितियां दोनो ही मै भयावह, डरावनी व खतरनाक है। कविता और कहानी दोनों में सूनापन रहस्य और तिलिस्म है। दोनों के ही कथासत्र की बनावट बहुत कुछ एक दूसरे से निकली है। दोनो का रचनाकार भी लगभग एक ही वर्ष का है 1957 जनवरी नयाखून में कहानी प्रकाशित हुई थी। और कविता 1957 अप्रैल में कवि में हुई थी। कविता और कहानी को एक साथ रखकर देखने से जो फैण्टेसी उभरती है उसमें ब्रह्मराक्षस का बिम्ब स्थानिकता की समीओं का अतिक्रमण करता है। यानि ब्रह्म रक्षस की स्थानीयता केवल बावड़ी तक या केवल सिंहद्वार के भीतर बहुमंजिला भवन तक ही सीमित नहीं है। यहाँ इसका संकेत छिपा है कि ब्रह्म राक्षस की स्थानीयता का विस्तार काफी व्यापक और सुदूर तक है। उदाहरण– ''सिंह द्वारा के लाल बर्रे गूँ–गूँ करती उस चारों ओर से काटने के लिए दौड़े लेकिन ज्योंहि उसने उसे पार कर लिया तो सूरज को धूप में चमकने वाली भूरी घास से भरे, विशाल, सूने आँगन के अवसर पास चारों ओर, उसे बरामदे दिखाई दिये– विशाल, भव्य और सूने बरामदे, जिनकी छतों में फानूस लटक रहे थे। लगता था कि जैसे अभी–अभी उन्हें कोई साफ करके गया है। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। आँगन से दीखने वाली तीसरी मंजिल की छज्जेवाली मुँडेर पर एक बिल्ली सावधानी से चलती हुई दिखाई दे रही थी। उसे एक जीना भी दिखाई दिया, लम्बा चौड़ा साफ–सुथरा।''

मुक्तिबोध अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन से सम्बन्धित अनेक प्रश्नों मान्यताओं परम्पराओं, विकृतियों और बिडम्बनाओं से टकराते दो–दो हाथ करते चलते है। मध्यवर्ग खास तौर से सरकारी आफिस में नौकरी पेशा वर्ग अपने सिद्धान्तों आदर्शों से परिचालित ओर संचालित होता है।

कष्टों को सहकर भी वह उन्हें छोड़ना नहीं चाहता है। जब विचार–सिद्धान्त टूटने लगते हैं तब उसका बड़ा कण होता है। वह उनकी रक्षा बार–बार करना चाहता है वह आगे भी बढ़ना चाहता है लेकिन अपनी उन परम्पराओं और मर्यादाओं के साथ जिसे वह अब तक जीता आया है। पूँजीवादी व्यवस्था में व्यक्ति को एक पूँजी मात्र माना जाता है। उसमें आदर्श और विचार टूटते जाते है। पूजीवाद व्यक्ति के अधिकारों को समाप्त कर देने पर तुला हुआ है। पक्षी और दीमक कहानी इसी प्रकार की कहानी है जहाँ एक नौजवान पक्षी दीमकों के स्वाद के कारण अपने दोनों पंख गवा बैठता है और उसकी उड़ने के शक्ति नष्ट हो जाती है वह बेकार और और शक्तिहीन हो जाता है। ''अब मैं उसे 'उतना' का क्या मतलब बताऊँ। साफ है कि उस भगवे खद्दर–कुरते वाले से मैं दुश्मनी मोल नहीं चाहता। मैं उसके प्रति वफादार रहुँगा क्योकि मैं उसका आदमी हूँ। भले ही वह बुरा हो भ्रष्टाचारी हो, किन्तु उसी के कारण मेरी आमदनी के जरिए बने हुए हैं। व्यक्ति–निष्ठा भी कोई चीज है, उसके कारण ही मैं विश्वास योग्य माना गया हूँ। इसलिए मैं कई महत्वपूर्ण कमेटियों का सदस्य हूँ'' 'क्लाइईथरली' की इसी प्रकार की कहानी है। इसमें कहानी में मुक्तिबोध ने जापान के हिरोशिया नगर पर अमेरिका विमान चालक कलाईथरली द्वारा गिराये गये बम से हुए भयानक विनाश उत्पन्न करूणा और अपराध बोध का चित्रण किया है। कहानी कार यह दिखाना चाहता है कि किस प्रकार पूंजीवादी व्यवस्था अपने निहित स्वार्थों की सिद्धि के लिए जन–जीवन का अपना विकास कर रही है। सरकारी अमला अपनी घिनौनी करतूतों को छिपाने के लिए कैसे–कैसे काम करता है। वह क्लाइ ईशरली को इस कारण के लिए पुरस्कृत भी करता है। लेकिन निरपराध लोगों के छत–विछत शवों, मांस के लोथड़ों चिखते– चिल्लाते लोगों और कटे फिटे चेहरे को देखकर उसके मन में जो करूणा उमड़ती है। वह कहानी को अपरा बोध की कहानी बना देता है। ''उस भयानक बदरंग बदसूरत कटी लोथों के शहर को देखकर उसका दिल टुकड़े–टुकड़े हो गया। उसका पता नहीं था कि उसके पास ऐसा हथियार है और उस हथियार का यह अंजाम होगा। उसके दिल में निरपराध जनों के प्रेतो, शवों लाथों, लाशों के कटे–पिटे चेहरे तैरने लगे। उसके हृदय में करुणा उमड़ आई। उधर अमरीकी सरकार ने उसे इनाम दिया। वह 'वीर हीरो' हो गया। लेकिन उसकी आत्मा कहती थी कि उसने पाप किया जघन्य पाप किया है। उसे दंड मिलना ही चाहिए''।

मुक्तिबोध मध्यवर्गीय समाज से जुड़े हुए थे। अत्याचार वाली नौकरी पेशा से ही पूरे परिवार का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा था। सारा जीवन निराला जी की आर्थिक तंगी में गुजरना पड़ा । काठ का सपना उनकी इसी प्रकार की कहानी है जहाँ लेखक ने मध्यवर्गीय जीव त्रासदी घुटन भरी व्यवस्था का चित्रण किया है। उसे लगता है कि प्रकार दोनों लकड़िया प्राण विहीन होकर आपस में गुथ गये हैं उसी तरह हम दोनों पति–पत्नी जीवन संघर्षों आर्थिक तंगी से लड़ते–लड़ते असहाय होकर एक दूसरे से मिल गये हैं। लेकिन कुछ नहीं कर सकते है। उस छोटी सी बच्ची सरोज के लिएभी जो आगे बढना चाहती है। पढ़ना चाहती है। लेकिन दो दम्पत्ति असहाय है वे काठ के समान हो गये है। कहानी उस अपराध–बोध से जमलेती है। जब पिता अपनी सन्तान की भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए कुछ नहीं कर पाता है। आर्थिक अभाव ने दोनों को ही असहाय और प्राणहीन काठ के रूपों में परिवर्तित कर दिया है। ''दोनों स्त्री–पुरुष के जीवन पर विराम का पूर्ण चिन्ह् लग गया है, काठ हो गये हैं। बाढ़ आती है किनारे पर पड़े हुए काठें को बहाकर ले जाती है। जल–विप्लव है। काष्ठ बहते जाते हैं, फिर भी वे प्राणहीन काठ आपस में गुँथे हुए बहे जा रहे हैं। बादल तुफान के कारण पेड़ तिरछे हो रहे हैं। पर वे गुथे–बँधे बहे जा रहे है। और हाँ गुथे बंधे तिरछे हो रहे है। पर वे गुथे–बँधें बहे जा है। और गुथे बंधे काठ खाली नहीं है।उन पर एक बालिका बैठी हुई है। हाँ वह सरोज है।''

मुक्तिबोध की कहानियाँ उनके मध्य वर्गीय भाषा संस्कारों से ही निःसृत हुई है। वे मध्यवर्गीय नौकरी पेशा समाज की समस्याओं को बड़ी ही संजीदगी के साथ अपनी कहानियों का विषय बनाते है।

तब यह स्वाभाविक हो जाता है। कि ये कहानियाँ उसी वर्ग की भाषा शैली में बात करती है। कार्यालयों में होने वाली उठापटक जी हुजूरी चापलूसी सी और घूस खोरी मटरमस्ती तथा हीला–हवाली का चित्रण इन कहानियों में होता है। बड़े सरकारी अफसर छोटे कर्मचारियों के साथ नौकरों सा बर्ताव करते है वे उनका आर्थिक ही नहीं अपितु मानसिक और शारीरिक शोषण भी करते है। मुक्ति बोध इसे सदिस नहीं 'सर्कस' कहते है। सरकारी आफिसों में जिस प्रकार भाषा शैली का प्रयोग होता है। उसका प्रयोग मुक्तिबोध अपनी इस कहानी में खूब बढचढ़ कर करते हैं। सभ्यता उनकी इसी प्रकार की कहानी है। ''नियम के विरूद्ध मैं नहीं था, वह था। लेकिन उसने मुझे जब डॉटकर कहा तो मैंने पहले अदब से फिर ठंडक से फिर और ठंडक से फिर खींझकर एक जोरदार जवाब दिया। उस जवाब में नासमझ और नाख्वाद जैसे शब्द जरूर थे। लेकिन साइंटिफिकली स्पीलिंग गलती उसकी थी, मेरी नहीं। फिर गुस्से में मैं नहीं, वह था।'' 'विपात्र' उनकी प्रसिद्ध कहानी है। जिसे कुछ आलोचकों ने उपन्यास के रूप में देखने का भी प्रयास किया है। इसी प्रकार भी कहानी है। जहाँ कहानी कार ने जीवन में उत्तरोत्तर आगे बढ़ने के लिए अपनाने जाने वाले विभिन्न तरीकों को बताया है। प्रतिभा और योग्यता के भी कुछ लोग जीवन की उचाइयाँ प्राप्त कर लेते हैं कहानी की बुनावट के लिए कहानी करने छोटे–छोटे वाक्यों में विन्यास कहानी की भाषा पाठक आकर्षित करती है– ''मै स्तब्ध मुग्ध रह गया। क्या मस्त लहराती हुई चाल थी। बिलकुल काला, लेकिन साँवला–पीली डिजाइनों वाला! नौजवान माली हाथ में डंडा लेकर खड़ा था। उस पर वार नहीं कर रहा था। सबने कहा मारो, मारो।'' लेकिन वह अड़ा रहा। ''मै नहीं मारूँगा साहब। यह यहाँ का देवता है। रखवाली करता है।''

मुक्तिबोध की कहानियों में प्रयुक्त भाषा अनुभव और संवेदना से निर्मित होती है। जिसमें शब्द संवेदना और अभिव्यक्ति के तौर–तरीके प्रायः पृथक होते है। जो उन्हें अन्य कहानीकारों से अलग करता है। उनका जीवनानुभव कहानियों की एक नयी शैली और शिल्प का निर्माण करते है। जहाँ लोकोक्तियाँ है। मुहावरे है, बिम्ब है प्रतीक है तथा ठेठ शब्दों के साथ ही साथ हिन्दीतर भाषाओं के शब्द और वाक्य भी प्रयुक्त हुए है। वे बिम्बो और प्रतीकों के माध्यम से अपनी बात कहते है– उनके बिम्ब और प्रतीक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अर्थ– सन्दर्भों को व्यक्त करते हैं– सतह से उठता आदमी का उदाहरण देखा जा सकता है– '' अनजाने ही मैं अकड़कर चलने लगता हूँ और किसी को ताव बताने की किस पर रौब झाड़ने की तबीयत होती है। इन सब टूटे हुए अक्षर (प्रेस टाइप) जैसे लोगों के बीच में से गुजरकर अपने को काफी ऊँचा और प्रभावशाली समझने लगता हूँ। सच कहता हूँ, इस समय मेरे पास पैसे भी हैं।''

मुक्तिबोध की कथा भाषा भाव–बोध के साथ ही साथ अर्थ बोध को व्यक्त करने में सक्षम है। उनकी भाषा न केवल खड़ी बोली हिन्दी की भाषिक संरचना को गहरे से व्यक्त करती है अपितु गवई अर्थों को भी संस्पर्श करती है। भाषा के संदर्भ में उनका विचार है–

भाषा विचित्र
जिसमें शक है कलाहीन
जिसमें प्रयोग है ग्रम्य और वे अति कठोर
जो भी नवीन
परन्तु सुन मत ओ कलाकार
तेरे शब्दों में लाख–लाख दिल वालों का उद्‌गार।।

जहाँ कही भी उनको अवसर मिलता है। वे काव्यभाव– कथा भाषा के बारे में अपने विचार व्यक्त करते चलते हैं। '' कवि भाषा का निर्माण करता है। जो कवि भाषा का निर्माण करता है। विकास करता है, वह निःसन्देह महान होता है। कलाकार को शब्द साधना द्वारा नये–नये भाव और नये अर्थ स्वप्न मिलते है। वहुधा आलोचना के चालु महावरे मै भाषा को गद्य और काव्य के विभेद में बाँटते हुए गद्य–भाषा

और काव्यभाषा कह दिया जाता है। लेकिन भाषा के ऐसे भेद तार्किक नहीं है फिर मुक्तिबोध के यहाँ तो काव्य भाषा और कथा में भी कोई विधागत विभेद नहीं रह जाता है। इनकी भाषाकार सम्बन्ध तो सीधे वयक के व्यक्तित्व निर्माण से जुड़ जाता है।

मुक्तिबोध की कथाभाषा किसी भी सरहद में नहीं बंधती है काव्यभाषा की तरह ही वह स्वाभाविक प्रवाह मापता और अर्थ गभित होती हुई आगे बढ़ती है। उनकी भाष मध्य वर्गीय जीवन संदर्भों से जुड़कर आगे बढ़ती है। नपे–तुले सधे हुए कदमों के साथ जब भाषा अपनी गति से आगे बढ़ती है तो मानव जीवन के समस्त सन्दर्भ जीवन्त होते हुए दिखाई देने लगते है। काव्य में ही नहीं अपितु कथा भाषा में भी बिम्बों प्रतीकों और सूत्रात्मक सृजन की भाषा का प्रयोग करते है। जिससे उनकी कहानियाँ एक कथा सूत्र स्वतः निर्मित होता चलता है। वे नई काव्यभाषा ही नहीं तैयार करते है। बल्कि नई कथा–भाषा भी गढ़ते है। तथ्यों ि कवे कथा भाषा में नई शक्ति तथा नमी ऊर्जा लाना चाहते थे। जो समाज की मनोभावों और विचारो के अनुभव हो नहीं अपितु उसे संवाहनीय और ग्रहणीय बना सके।

मुक्तिबोध की कथात्मक संरचना – मुक्तिबोध की कहानियाँ उनके विचारों और संवेदनाओं की वाह्य है। काव्य की भाँति वे अवचेतन मन–मस्तिष्क चल रही घटनाओं को शब्दों के माध्यम से रचा और भाव विन्यास देते चलते हैं। उनकी कहानियाँ उनके सामाजिक सरोकारों, राजनैतिक पक्षधरता और परिवारिक पृष्ठभूमि के आलोक में निर्मित होती है। उनका कथा संसार 1936 से 1964 तक के काव्यखण्ड में फैला हुआ है। यह भारत की पराधीनता और स्वातन्त्र्योत्तर का समय है। स्वतन्त्रा के बाद भी देश की सामाजिक और आर्थिक स्थित बदलाव नहीं भाषा था। समाज की आर्थिक स्थित बहुंत ठीक नहीं थी जिसका प्रभाव उनके कथा साहित्य पर भी पड़ा उनकी कहानियाँ काव्य की तरह ही अधेरा आतेक और अधिकार की स्वतन्त्रता से ही परिचालित होती है। सभी कहानियों का इन्हीं तीन सूत्रों के आस पास चलकर काटता है। ब्रह्मराक्षस का सपना प्रश्न अधेरे में खलीलकाव्य, चाबुक, समझौता जेक्शन, जिन्दगी की कतरन एक दाखिल दफ्तर शाम, आदि विभिन्न कहानियाँ इसी प्रकार की है। समझौता कहानी का उदाहरण प्रख्य है– '' मै एक जगह ठिठक जाता हूँ, जहाँ से जीना धूम नीचे उतरता है। यह एक सॅकरी औगन नुमा जगह है। मै रिलि.. के पास खड़ा हो जाता हूँ। नीचे कूद पडूँ तो बस काम तमाम हो जाय जान चली जायेगी, फिर सब खत्म अपमान खत्म भूख खत्म लेकिन भी तो खत्म हो जायेगा।

मुक्तिबोध का कथा साहित्य ज्ञानात्मक संवेदना और संवेदनात्मक ज्ञान से ही स्वरूप प्राप्त करता है। उनकी प्रत्येक कहानी मानवीय संवेदना से आते–प्रति दिखाई देती है। वे कहानी को संवेदन का संवाहन मानते थे। उनका विचार था कि कहानी कितनी ही मानवीय संवेदना का वाहक करेगी वह उतनी शसक्त और प्रभाव शाली होगी। उनकी कहानी द्वन्द्व और जिज्ञासा के अर्थ ही कुतुहल उत्पन्न करती है। उनमें ऐतिहासिक शक्तियों के द्वन्द्व और सामजिक अर्न्तविरोध के व्यापक धरातल पर चिचित्र किया गया है। मानवीय मूल्यों की स्थापना की दृष्टि से क्लाई ईथरली उनकी प्रसिद्ध कहानी है। उनकी कथा संरचना उनकी मान्यताओं के अनुरूप ही दिखाई देते हैं। जीवन संघर्ष जीवनानुभव सौन्दर्यानुभव संवेदनात्मक दिशा ज्ञान–प्रक्रिया तथा वर्गीय चेतना आदि उनकी मान्यताओं के ऐसे आधार है। जिसपर उनकी कथाएँ निर्मित होती है। इनकी कहानियों में व्यक्ति चेतना की सहज अभिव्यक्ति दिखाई देती है।

काव्य और कथा शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन– मुक्तिबोध कवि होने के साथ ही साथ उच्च्कोटि के कथाकार भी है। उनकी कविताएँ उनके जीवनानुभव को ही व्यक्त करती है। वे अपनी कविताओं में जो चित्र निर्मित करते हैं। वे उनकी सौन्दर्यवादी दृष्टि काव्यभाषा फैंटेसी, बिम्म–प्रतीक से बनते है। अँधेर में ब्रह्मराक्षस मुझे पुकारती हुई पुकार खो खो कहीं आदि कविताएँ इसी प्रकार की है।

उनकी कहानियाँ भी इसी प्रक्रिया का परिणाम है। जो दृष्टि और विचार से काव्य में लेकर चलते है वहीं भाषा, कथा–भाव का प्रयोग वे कथा साहित्य के लिए भी करते है। एक कवि जिब कथाकार की भूमिका में भी होता है। तो वह अपनी एक रचना से होते हुए दूसरी रचना में संवाद स्थापित करता है, उसका लेखन बहुस्तरीय होता है। मुक्तिबोध के काव्य आरम्भ का समयावद्ध है और यही 1936 से ही उसकी कथा यात्रा प्रारम्भ होती है उनकी विचारधारा उनकी सौन्दर्य बोध विश्व मानवता दुख और संघर्ष उनकी कवितओं के साथ ही साथ कथा में भी अभिव्यक्त होता है। वे था के लिए अलग से कोई प्रयत्न नहीं करते हैं। कथा का शिल्प विधान भी उन्हीं तत्वों से निर्मित होता है। जिससे काव्य–संसार निर्मित होता है। मुक्तिबोध की रचनाधर्मिता बहुस्तरीय है। वे किसी खास विधा से बंधकर नहीं रहे। इसलिए उनके सामने रचना के लिए कोई एक विषय नहीं रहे। विविधता उनके व्यक्तित्व का सौन्दर्य है। मुक्तिबोध का रचना व्यक्तित्व एक रेखी पन होकर वृत्ती है। मुक्तिबोध यह स्वयं स्वीकार करते है कि ''जिज्ञासा के विस्तार के कारण कथा की ओर मेरी प्रवृत्ति बढ़ गयी है। कहानी लेखन आरम्भ करते ही मुझे अनुभव हुआ कि कथा–तत्व उतना ही समीप है जितना काव्य''।

मुक्तिबोध जीवनानुभव के रचनाकार थे। उनके रचनाओं में एक ही अनुभव के अनेकों रूप मिलते हैं। उनकी यह बात उनके सारे साहित्य पर चरितार्थ होती है। चाहे वह काव्य हो या कथा साहित्य। इस अनुभव विराटता की एक खास विशेषता है दुहराव का न होने चाहे काव्य हो या कहानी कहीं भी शिल्प में यह दुहराव दिखाई नहीं देता है। यह उनकी काव्य–दृष्टि ही है जो एक ही अनुभव के बावजूद उनकी हर कहानी में नवीनता है। उनकी रचनादृष्टि में चाहे वह कहानी हो अथवा कविता–फैटोसी के अन्तर्गत कल्पना का मूलकार्य, मन के निगूढ़ तत्वों को प्रकाषित करते हुए, विभिन्न रंगों में उन्हें अपने समस्त सौन्दर्य के साथ उद्घाटित करना रहता है। मुक्तिबोध की कहानी में जो गूढ़ बिम्ब मिलते हैं, उनके मूल में यही फैटेसी है। ऐसा ही बिम्ब ब्रह्मराक्षस का चाँद का मुँह टेढ़ा है। में ब्रह्मराक्षस नाम से कविता है। और 'काठ का सपना' में ब्रह्म राक्षस का शिष्य नाम से कहानी है। कविता में ब्रह्मराक्षस बावड़ी में रहता है। बावड़ी के वातावरण की जो कथा है उसे कविता में कहा गया है''। मुक्ति बोध के पात्र भी काव्य तथा कहानी में समाज रूप से जीवन संघर्षों में उलझे हुए दिखाई देते हैं। वे समाज में परिवर्तन करना चाहते हैं। वे सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करते है। चाहे वह भूल गलती कविता हो या फिर क्लाईईथरली को नायक का आत्मसंघर्ष हो।

मुक्तिबोध अपनी कविताओं की तरह ही कथा संरचना में मनोविज्ञान का सहारा लेते है जिस प्रकार उनकी कविताएँ मानसिक उथल–पुथल निर्माण विनाश के इर्द–गिर्द चक्कर लगाती है। कवि शंका की दृष्टि से सबकों देखता है। उसी प्रकार उनकी कहानियाँ भी शंका अधेरे और परम अभिव्यक्ति की खोज से ही शुरू होती है। कहानी के वातावरण के निर्माण में वे लम्बे–लम्बे वाक्यांश का प्रयोग करते है। लेकिन नाटकीय अंशों को व्यक्त करने के लिए अपेक्षाकृत छोटे–छोटे संवादों का सहारा लेते है। यही बात उनकी कविता पर लागू होती है।

सन्दर्भ सूची–

1. सं. नेमिचन्द्र जैन मुक्तिबोध समग्र भाग–2 पृ. 370
2. सं. सन्तोष चतुर्वेदी–अनहद मुक्तिबोध विशेषांक – पु. 167
3. सं. नेमिचन्द्र जैन–मुक्तिबोध समग्र –4 पृ. 131
4. सं. नेमिचन्द्र जैन– मुक्तिबोध समग्र– 4 पृ. 166
5. सं. नेमिचन्द्र जैन– मुक्तिबोध समग्र– 4, पृ. 178
6. सं. नेमिचन्द्र जैन– मुक्तिबोध समग्र–4 पृ. 194
7. सं. नेमिचन्द्र जैन– मुक्तिबोध समग्र– 4 पृ. 149

8. सं. नेमिचन्द्र जैन– मुक्तिबोध समग्र– 4 पृ. 228
9. सं. नेमिचन्द्र जैन– मुक्तिबोध समग्र– 4 पृ. 220
10. नन्द्र किशोर नवल– मुक्तिबोध ज्ञान और संवेदना पृ. 403
11. संतोष चतुर्वेदी– अनहद मुक्तिबोध विशेषांक पृ. 227
12. सं. नेमिचन्द जैन– मुक्तिबोध समग्र– 4 पृ. 148
13. सं. नेमिचन्द जैन– मुक्तिबोध रचनावली भाग– 5 (अनहद पृ. 396)
14. संतोष चतुर्वेदी– अनहद मुक्तिबोध विशेषांक पृ. 167

●